झूठी तारीफ

मौलाना जलील अहसन नदवी रह. राहे अमल हिन्दी.

‘नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.’

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

{१} मुस्लिम, रावी हज़रत मिकदाद रदी; रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- की जब तुम तारीफ करने वालों को देखो तो उन्के मुंह पर मिट्टी फेंको. तारीफ करने वाले से मुराद वो लोग है जिन्का पेशा ही लोगो की तारीफे करना होता है. ये लोग आते है और उस शख्स की तारीफ में जमीन और आसमान एक कर देते है ताकि कुछ बखशिश मिल जाए, लोगो की तारीफ शेअर और शायरी में भी हो सकती है और और आम बोलचाल में भी, और ऐसे लोग जिहालत के जमाने में भी थे, और हर ज़माने में पाए जाते है ऐसे लोगों के बारे में हिदायत दी गई है की जब वो इनाम और बखशिश की गर्ज से झूठी सच्ची तारीफे करने के लिए आए तो उन्के मुंह पर मिट्टी डाल दो यानी उन्को अपने मकसद में नाकाम लौटा दो.

{२} मिश्कात, रावी हज़रत अनस रदी; रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- की जब गुनेहगार की तारीफ की जाती है तो अल्लाह तआला गुस्सा होता है और उस्की वजह से अर्श हिलने लगता है. ये इसलिए की जो शख्स अल्लाह के आदेशों की इज़्ज़त नहीं करता बल्की उस्के आदेशों को खुल्लम खुल्ला तोडता है तो वो इज़्ज़त व एहतराम (प्रतिष्ठा) के लायक नहीं रहा उस्का हक तो ये है की उसे जिल्लत की निगाह से देखा जाए, अब अगर मुसलमान समाझ में उस्की इज़्ज़त की जाती है तो उस्का मतलब ये है की लोगों में अपने दीन, अल्लाह और रसूल से मुहब्बत बाकी नहीं है, या अगर है तो बहुत ही कमज़ोर हालत में है ऐसी हालत में ज़ाहिर है की अल्लाह का गुस्सा ही भडकेगा, उस्की रहमत उस बस्ती पर क्यों नाज़िल होगी.

{३} बुखारी व मुस्लिम, रावी हज़रत अबू बकर रदी; एक आदमी ने एक आदमी की रसूलुल्लाहﷺ की माजूदगी में तारीफ की, तो आपने फरमाया- अफसोस तूने अपन भाई की गर्दन काट डाली (ये बात आपने तीन बार फरमाई) तुम्मे से

जो शख्स किसी की तारीफ करे और ऐसा करना जरूरी हो तो इस तरह कहो की में फलां शख्स को ऐसा खयाल करता हूं, और अल्लाह बाखबर है. इस शर्त पर की वो वास्तव में समझता हो की वो शख्स इस तरह का है, और किसी शख्स की तारीफ अल्लाह के मुकाबले में ना करे. रसूलुल्लाहﷺ की मजलिस में एक शख्स के तकवा और उस्की अच्छी हालत की तारीफ की गई थी, जाहिर बात है की इस सूरत में आदमी के रिया (नुमाइश) में पड जाने का डर था इसलिए आपﷺ ने मना फरमाया- और कहा की तूने अपने भाई को हलाक कर दिया. फिर आपने ये हिदायत फरमाई की अगर किसी शख्स के बारे में कुछ कहना ही पड जाए तो इस तरह कहो की में फलां शख्स को नेक समझता हूं और इस तरह ना कहे की फलां अल्लाह का वली (दोस्त) है या फलां यकीनन जन्नती है, इस तरह कहने का किसी बन्दे को हक नहीं है, क्योंकि क्या मालूम की जिस्को वो जन्नती कह रहा है वो अल्लाह की निगाह में जन्नती है या नहीं? जब तक आदमी जिन्दा है ईमान की आज़माइश गाह में है क्या मालूम की कब आदमी का दिल पलट जाए और सीधा रास्ता खोदे, इसलिए किसी जिन्दा नेक

आदमी के बारे में यकीन के साथ कोई हुक्म नहीं लगाना चाहिए और मरने के बाद भी किसी के बारे में यूं नहीं कहना चाहिए की वो जन्नती है. उलमा का कहना है की अगर किसी शख्स के फितने में पडने का दर ना हो और मौका आ पडे तो उस्के मुंह पर उस्के इल्म और तकवा वगैरा की तारीफ की जा सकती है लेकिन आजिज़ के नज़दीक इस्से बचना बेहतर है, क्योंकि फितने में पडने या ना पडने का फैसला अल्लाह ही कर सकता है, किसी की अनदरूनी कैफियत के आमतौर पर सही, अन्दाज़ा नहीं हो सकता.